11. लौटकर आऊंगा फिर

लौटकर आऊँग फिर कवि परिचय बाँग्ला के सर्वाधिक सम्मानित एवं चर्चित कवियों में से एक जीवनानंद दास का जन्म 1899 ई० में हुआ था। रवीन्द्रनाथ के बाद बाँग्ला साहित्य में आधुनिक काव्यांदोलन को जिन लोगों ने योग्य नेतृत्व प्रदान किया था, उनमें सबसे अधिक प्रभावशाली एवं मौलिक कवि जीवनानंद दास ही हैं। इन कवियों के सामने सबसे बड़ी चुनौती के रूप में था रवीन्द्रनाथ का स्वच्छंदतावादी काव्य । स्वच्छंदतावाद से अलग हटकर कविता की नई यथार्थवादी भूमि तलाश करना सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था। इस कार्य में अग्रणी भूमिका जीवनानंद दास की रही। उन्होंने बंगाल के जीवन में रच-बसकर उसकी जड़ों को पहचाना और उसे अपनी कविता में स्वर दिया। उन्होंने भाषा, भाव एवं दृष्टिकोण में नई शैली, सोचं एवं जीवनदृष्टि को प्रतिष्ठित किया ।

सिर्फ पचपन साल की उम्र में जीवनानंद दास का निधन एक मर्मांतक दुर्घटना में हुआ, सन् 1954 में। तब तक उनके सिर्फ छह काव्य संकलन प्रकाशित हुए थे 'झरा पालक', 'धूसर पांडुलिपि', 'वनलता सेन', 'महापृथिवी': 'सातटि तागर तिमिर' और 'जीवनानंद दासेर श्रेष्ठ कचिता'! उनके अन्य काव्य संकलन 'रूपसी बांग्ला', 'बला अबेला कालबेला', 'मनविहंगम' और 'आलोक पृथिवी' निधन के बाद प्रकाशित हुए। उनके निधन के बाद लगभग एक सौ कहानियाँ और तेरह उपन्यास भी प्रकाशित किए गये ।

वनलता संन' काव्यग्रंथ की 'वनलता सेन' शीर्षक कविता को प्रबुद्ध आलोचकों द्वारा रवींद्रोत्तर युग की श्रेष्ठतम प्रेम कविता की संज्ञा दी गयी है। वस्तुतः यह कविता बहुआयामी भाव-व्यंजना का उत्कृष्ट उदाहरण है। निखिल बंग रवींद्र साहित्य सम्मेलन के द्वारा 'वनलता सेन' को 1952 ई० में श्रेष्ठ काव्यग्रंथ का पुरस्कार दिया गया था।

यहाँ समकालीन हिंदी कवि प्रयाग शक्ल द्वारा भाषांतरित जीवनानंद दास की कविता प्रस्तुत है। यह कवि की अत्यंत लोकप्रिय और बहुप्रचारित कविता है। कविता में कवि का अपनी मातृभूमि तथा परिवेश से उत्कट प्रेम अभिव्यक्त होता है। बंगाल अपने नैसर्गिक सम्मोहन के साथ चुनिंदा चित्रों में सांकेतिक रूप से कविता में विन्यस्त है। इस नश्वर जीवन के बाद भी इसी बंगाल में एक बार फिर आने की लालसा मातृभूमि के प्रति कवि के प्रेम की एक मोहक भंगिमा के रूप में सामने आती है।

लौटकर आऊँग फिर पाठ का अर्थ नई कविता काल के कवि प्रखर कवि जीवनानंद दास हिन्दी साहित्य में अपना एक अलग पहचान बनाये हुए हैं। रवीन्द्रनाथ के बाद बंगला साहित्य में आधुनिक काव्यांदोलन को जिन लोगों ने योग्य नेतृत्व प्रदान किया था उनमें सबसे अधिक प्रभावशाली एवं मौलिक कवि जीवनानंद दास ही है। स्वच्छंदतावाद से अलग हटकर कविता की नई यथार्थवादी भूमि तलाश कर इन्होंने ने एक नया आयाम दिया।

प्रस्तुत कविता में कवि का अपनी मातृभूमि तथा परिवेश से उत्कट प्रेम अभिव्यक्त होता है। नश्वर शरीर त्यागने के बाद भी पुनः मनुष्य रूप में अवतरित होकर बंगाल को ही अपना जन्मभूमि चुनने के पीछे कवि की उत्कृष्टता देखने में बनती है। यदि मनुष्य में नहीं जन्म लूँ तो अबाबील, कौवा, हँस आदि में जन्म लेकर भी बंगाल की धरती पर ही विचरण करूँ। नदी की पानी, कपास के पेड़ों पर सुनाई पड़ने वाली बोली सभी में मेरा ही अंश हो'। नदी के वक्षस्थल पर तैरती हुए नौकाओं की पालों में भी हमारी' उत्कंठा है। संध्याकालीन आकाश में रेंगने वाले पक्षिगणों के बीच हमारी उपस्थिति अनिवार्य होगी। वस्तुतः इस कविता में नश्वर जीवन के बाद भी इसी बंगाल में एक बार फिर आने की लालसा मातृभूमि के प्रति कवि के प्रेम की एक मोहक भंगिमा के रूप, में सामने आती है।

शब्दार्थ

अबाबील : एक प्रसिद्ध काली छोटी चिड़िया जो उजाड़ मकानों में रहती हैं, भांडकी

पेंग : झूले का दोलन

रूपसा : बंगाल की नदी विशेष

सारस : पक्षी विशेष, क्रौंच

Q 1. अगले जन्मों में बंगाल में आने की क्या सिर्फ कवि की इच्छा है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- अगले जन्मों में बंगाल में आने की प्रबल इच्छा तो कवि की है ही। लेकिन, इसकी अपेक्षा जो बंगालप्रेमी हैं, जिन्हें बंगाल की धरती के प्रति आस्था और विश्वास है, कवि उन लोगों का भी प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

Q 2. कविता में आए बिंबों का सौंदर्य स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- कवि ने प्राकृतिक सौंदर्य के वातावरण में बिम्बों की स्थापना सौंदर्यपूर्ण चित्रमयी शैली में किया है। बंगाल की नवयुवतियों के रूप में अपने पैरों में धुंघरू बाँधने का बिम्ब उपस्थित किया है। हवा का झोंका तथा वृक्षों की डाली को झूला के रूप में प्रदर्शित किया है । आकाश में हंसों का झुण्ड अनुपम सौंदर्य लक्षित करना है।

Q 3. कवि किनके बीच अँधेरे में होने की बात करता है ? आशय स्पष्ट करें।

उत्तर :- संध्याकाल जब ब्रह्मांड में अंधेरा का वातावरण उपस्थित होने लगता है उस समय सारस के झुंड अपने घोंसलों की ओर लौटते हैं तो उनकी सुन्दरता मन को मोह लेती है। यह सुन्दरतम दृश्य कवि को भाता है और इस मनोरम छवि को . वह अगले जन्म में भी देखते रहने की बात कहता है।

Q 4. कविता की चित्रात्मकता पर प्रकाश डालिए।

उत्तर :- प्रस्तुत कविता की भाषाशैली भी चित्रमयी हो गयी है, प्राकृतिक वर्णन में कहीं-कहीं अनायास ही चित्रात्मकता का प्रभाव भी है । खेतों में हरे-भरे लहलहाते धान, कटहल की छाया, हवा के चलने से झूमती हुई वृक्षों की टहनियाँ, झूले के चित्र की रूपरेखा चित्रित है। आकाश में उड़ते हुए उल्लू और संध्याकालीन लौटते हुए सारस के झुंड के चित्र हमारे मन को आकर्षित कर लेते हैं।

Q 5. कवि अगले जीवन में क्या-क्या बनने की संभावना व्यक्त करता है, और क्यों ?

उत्तर :- कवि को अपनी मातृभूमि प्रेम में विह्वल होकर चिड़ियाँ; कौवा, हंस, उल्लू, सारस बनकर पुनः बंगाल की धरती पर अवतरित होना चाहते हैं।

Q 6. कवि किस तरह के बंगाल में एक दिन लौटकर आने की बात करता है ?

उत्तर :- बंगाल के घास के मैदान, कपास के पेड़, वनों में पक्षियों की चहचहाहट एवं सारस की शोभा अनुपम छवि निर्मित करते हैं। बंगाल की इस अनुपम, सुशोभित एवं रमणीय धरती पर कवि पुनर्जन्म लेने की बात करते हैं।

Q 7. 'लौटकर आऊँगा फिर' कविता के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर :- यहाँ उद्देश्य के आधार पर शीर्षक रखा गया है। कवि की उत्कट इच्छा मातृभूमि पर पुनर्जन्म की है। इससे कवि के हृदय में मातृभूमि के प्रति प्रेम दिखाई पड़ता है। शीर्षक कविता के चतुर्दिक घूमती है। शीर्षक को केन्द्र में रखकर ही ... कविता की रचना हुई है । अतः, इन तथ्यों के आधार पर शीर्षक पूर्ण सार्थक है।

Q 8. 'जीवनानंद दास द्वारा रचित "लौटकर आऊँगा फिर' शीर्षक कविता का सारांश अपने शब्दों में लिखें।

उत्तर :- 'लौटक र आऊँगा फिर' शीर्षक कविता राष्ट्रीय चेतना की कविता है जिसमें कवि का अपनी मातृभूमि तथा अपने देश की प्रकृति के प्रति उत्कट-प्रेम अभिव्यक्त हुआ है। कवि अपने नश्वर जीवन के बाद पुन: अपनी मातृभूमि बंगाल में आने की लालसा रखता है। वह मरने के बाद किसी भी रूप में अपनी मातृभूमि से जुड़ना चाहता है।

कवि कहता है कि मैं बहती नदी के किनारे फैले धान के खेतोंवाले क्षेत्र, बंगाल में एक दिन अवश्य लौटकर आऊँगा। हो सकता है तब मैं मनुष्य न होऊँ, अबाबील पक्षी होऊँ या कौंवा। उस भोर में मैं बंगाल लौटकर आना चाहता हूँ जो भोर धान की नयी फसल पर कुहारे के पालने पर कटहल की छाया तक उल्लास-भरा पेंगे मारता होगा। हो सकता है कि मैं किसी किशोरी का हंस बनकर पैरों में लाल धुंघरन बाँधे हरी घास की सुगंध से परिपूर्ण वातावरण में दिन-दिन भर पानी में तैरता रहूँ। मुझे बंगाल की नदियाँ बुर लाएँगी, मैं दौड़ा चला आऊँगा; मुझे बंगाल के हरे-भरे मैदान बुलाएँगे, मैं शीघ्र आ जाऊँगा। नदी की संगीतमय चंचल लहरों से धोए गए सजल किनारों पर आकर मुझे कितनी खुशी होगी।

कवि कहता है कि मैं उसी बंगाल में लौटकर आना चाहता हूँ जहाँ शाम में उल्ल हवा के साथ मौज में उड़ते हैं या कपास के पौधे पर बैठकर मस्ती में बोलते हैं। मैं वहाँ आना चाहता हूँ जहाँ रूपसा के गंदले पानी में फटेपाल सी नाव लिए कोई लड़का जाता है; जहाँ रंगीन। बादलों के बीच सारस

अँधेरे में अपने आश्रम की ओर तेजी से उडते जाते हैं। मैं चाहता हूँ कि मैं भी उन सारसों के बीच होऊँ। ऊन सारसों के बीच मुझे कितना आनंद मिलेगा।

Q 9. व्याख्या करें–

"खेत हैं जहाँ धान के, बहती नदी
के किनारे फिर आऊँगा लौट कर
एक दिन – बंगाल में;"

उत्तर :- प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ हमारी हिन्दी पाठ्य-पुस्तक के 'लौटकर आऊँगा फिर' शीर्षक से उद्धत हैं। इस अंश से पता चलता है कि कवि अगले जन्म में भी अपनी मातृभूमि बंगाल में ही जन्म लेना चाहता है।

प्रस्तुत पद्यांश में कवि की मातृभूमि के प्रति प्रेम दिखाई पड़ता है। कवि ने बंगाल के प्राकृतिक सौंदर्य के साथ वहाँ के खेतों में उगने वाली धान की फसलों का मनोहर चित्र खींचा है। कवि' कहता है कि जिस बंगाल के खेतों में लहलहाती हुई धान की फसलें हैं वहाँ मैं फिर लौटकर आना चाहता हूँ। जहाँ कल-कल करती हुई नदी की धारा अनायास ही लोगों को आकर्षित कर लेती है वहाँ ही मैं जन्म लेना चाहता हूँ। यहाँ स्पष्ट है कि कवि अपनी भावना को स्वछंद स्वरूप प्रदान करता है।

Q 10. व्याख्या करें –

"बनकर शायद हंस मैं किसी किशोरी का;
धुंधरू लाल पैरों में;
तैरता रहूँगा बस दिन-दिन भर पानी में
गंध जहाँ होगी ही भरी, घास की।"

उत्तर :- प्रस्तुत अवतरण बांग्ला माहित्य के प्रख्यात कवि जीवनानंद दास द्वारा रचित "लौटकर आऊँगा फिर" कविता । से उद्धृत है। इस अंश में कवि बंगाल की भूमि पर बार-बार जन्म लेने की उत्कट इच्छा को अभिव्यक्त करता है।

यहाँ कवि बंगाल में एक दिन लौटकर आने की बात कहता है। वह अगले जन्म में भी अपनी मातृभूमि बंगाल में ही जन्म लेने का विचार प्रकट करता है। वह

हंस. किशोरी और घुघरू की बिम्ब-शैली में अपने-आपको उपस्थित करना कहता है कि जहाँ की किशोरियाँ पैरों में घुघरू बाँधकर हंस के समान मधा में अपनी नाच से लोगों को आकर्षित करती हैं, वही स्वरूप मैं भी धारण करना चाहता हूँ। यहाँ तक कि बंगाल की नदियों में तैरने के एक अलग आनंद की अनभति मिलती है। यहाँ की क्यारियों में उगने वाली घास की गंध कितनी मनमोहक होती है यह तो बंगप्रांतीय ही समझ सकते हैं । इस प्रकार, कवि पर्ण अपनत्व की भावना में प्रवाहित होकर हार्दिक इच्छा को प्रकट किया गया है।

11. लौटकर आऊंगा फिर

1. 'लौटकर आऊंगा फिर कविता किनकी रचना है?

(A) कुँवर नारायण

(B) अज्ञेय

(C) अनामिका

(D) जीवनानंद दास

ANS – (D)

2. जीवनानंद दास बाँग्ला के किस काल/युग के कवि है?

(A) भारतेन्दु युग

(B) द्विवेदी युग

(C) रवींद्रोत्तर युग

(D) छायावादी युग

ANS – (C)

3. कवि जीवनानंद दास का जन्म कब हुआ था?

(A) 1869 ई०

(B) 1894 ई०

(C) 1899 ई०

(D) 1907 ई०

ANS – (C)

4. जीवनानंद दास की किस कविता को प्रबुद्ध आलोचकों द्वारा रवींद्रोत्तर युग की श्रेष्ठतम प्रेम कविता की संज्ञा दी गई है?

(A) मनविहंगम

(B) वनलता सेन

(C) रूपसी बंग्ला

(D) झरा पालक

ANS – (B)

5. 'लौटकर आऊँगा फिर' कविता किस कवि द्वारा भाषांतरित की गई है?

(A) जीवनानंद दास

(B) विनोद कुमार शुक्ल

(C) प्रयाग शुक्ल

(D) कुँवर नारायण

ANS – (C)

6. बंगला भाषा के सर्वाधिक सम्मानित एवं चर्चित कवियों में से एक है-

(A) वीरेन डंगवाल

(B) कुँवर नारायण

(C) जीवनानंद दास

(D) रेनर मारिया रिल्के

ANS – (C)

7. किस कविता में कवि जीवनानंद दास का अपनी मातृभूमि तथा परिवेश से उत्कट प्रेम अभिव्यक्त होता है।

(A) मेरे बिना तुम प्रभु

(B) लौटकर आऊँगा फिर

(C) हिरोशिमा

(D) अक्षर ज्ञान

ANS – (B)

8. 'कविता लौटकर आऊँगा फिर में कवि कहाँ लौटकर आने की लालसा व्यक्त करते हैं?

(A) बिहार

(B) बंगाल

(C) झारखंड

(D) उड़ीसा

ANS – (B)

9. " खेत है जहाँ धान के बहती नदी के किनारे फिर आऊंगा लौट कर एक दिन बंगाल में।"

उपर्युक्त पद्यांश के कवि कौन हैं?

(A) जीवनानंद दास

(B) प्रेमघन

(C) पंत

(D) दिनकर

ANS – (A)

10. जीवनानंद दास किस भाषा के सर्वाधिक सम्मानित एवं चर्चित कवियों में से एक है?

(A) हिन्दी

(B) संस्कृत

(C) मैथिली

(D) बंगला

ANS – (D)

11. 'वनलता सेन' के कवि हैं-

(A) प्रेमधन

(B) वीरेन डंगवाल

(C) जीवनानंद दास

(D) रेनर मारिया रिल्के

ANS – (C)

12. कवि अगले जीवन में क्या बनने की अभिलाषा व्यक्त करते हैं?

(A) आबावील

(B) कौआ

(C) हंस

(D) उपर्युक्त सभी

ANS – (D)

13. बन कर शायद हंस में किसी किशोरी का घुंघरू लाल पैरों में तैरता रहूँगा बस दिन-दिन भर पानी में गंध जहाँ होगी हरी-भरी घास को प्रस्तुत पंक्ति किस कविता को है?

(A) भारतमाता

(B) स्वदेशी

(C) लौटकर आऊँगा फिर

(D) मेर बिना तुम प्रभु

ANS – (C)

14. लौटकर आऊँगा फिर पाठ से कवि कहाँ लौटने की बात कहते हैं?

(A) बिहार में

(B) असम में

(C) उड़ीसा में

(D) बंगाल में

ANS – (D)

15. लौटकर आऊंगा फिर कविता की हिन्दी रूपांतरण किसने किया?

(A) रामचन्द्र शुक्ल

(B) प्रयाग शुक्ल

(C) यतीन्द्र मिश्र

(D) हजारी प्रसाद द्विवेदी

ANS – (B)

16. निखिल बंग रवींद्र साहित्य सम्मेलन द्वारा 'वनलता सेन को कब श्रेष्ठ काव्यग्रंथ का पुरस्कार दिया गया था?

(A) 1950 ई० में

(B) 1952 ई० में

(C) 1953 ई० में

(D) 1955 ई० में

ANS – (B)

17. जीवनानंद दास के जीवन काल में कितने काव्य संकलन प्रकाशित हुए थे?

(A) पाँच

(B) आठ

(C) छः

(D) दस

ANS – (C)

18. कवि कपास के पेड़ पर किसकी बोली सुनने की बात करता है?

(A) तोते की

(B) कबूतर की

(C) कौवा की

(D) उल्लू की रचना है

ANS – (D)

19. 'झरा पालक' किसकी

(A) जीवनानंद दास

(B) रेनर मारिया रिल्के

(C) अनामिका

(D) कुँवर नारायण

ANS – (A)

20. 'रूपसी बाँग्ला' किसकी रचना है?

(A) अज्ञेय

(B) अनामिका

(C) जीवनानंद दास

(D) दिनकर

ANS – (C)